हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

परिचयः

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हस्नी नदवी 24 नवम्बर सन् 1914 ई0 को तकीया कला रायबरेली यू0पी0 के एक पढ़े लिखे परिवार में पैदा हुए और 31 दिसम्बर सन् 1999 ई0 में आप का देहान्त हो गया।

दारुल उलूम नदवतुल उलेमा लखनऊ से सनद फ़ज़ीलत (उत्कृष्ठता–प्रमाण पत्र) प्राप्त किया और फिर वही पर पूरी उम्र मास्टर और प्रबन्धक के पद पर रहे। उर्दू और अरबी में सैकड़ों किताबें लिखीं।

''माजा ख़सेरल आलम बे इन्हितातिल मुस्लिेमीन'' अरबी में, और ''इन्सानी दुनिया पर मुसलमानों के उरूज व ज़वाल का असर'' उर्दू ने पूरे इस्लामी जगत को प्रभावित किया। इस किताब की वजह से आप अरब जगत और इस्लामी जगत में काफ़ी मशहूर हुए

आप की प्रसिद्धी व पहचान एक उपदेशक और इस्लामी विचारक के रूप में होती है, यही वजह है कि आपने देश और विदेश में इतने बड़े पद और सम्मान प्राप्त किये हैं।

नदवतुल उलेमा ने अपने प्रबन्धकीय कार्यकाल के दौरान शिक्षा, शिक्षण और निर्माण में काफ़ी प्रगति की और देश में एक प्रतिष्ठित संस्थान का दर्जा हासिल किया। इसी तरह आप की अध्यक्षता के दौरान आल इण्डिया मुसिलम पर्सनल ला बोर्ड को बहुत लोकप्रियता मिली और भारत के मुसलमानों का एक विश्वसनीय और संयुक्त मंच बन गया।

☆☆☆